

## ‘दादा भगवान’ को साक्षी में



‘दादा भगवान’ को साक्षी में रखते;  
सीमंघर स्वामी को नमस्कार करते,

पंच परमेष्ठी को नमस्कार करते,  
ॐ परमेष्ठी को नमस्कार करते,  
विहरमान तीर्थंकर को नमस्कार करते,

वीतराग देव-देवियों को नमस्कार करते,  
महावीर शासन संरक्षक को नमस्कार करते,  
अपक्ष देव-देवियों को नमस्कार करते,

तीर्थंकर साहिबों को नमस्कार करते,  
श्री कृष्ण भगवान को नमस्कार करते,  
श्री शिवस्वरूप को नमस्कार करते,

विरते सर्वज्ञ को नमस्कार करते,

समकितधारी महात्माओं को नमस्कार करते,  
शलाका पुरुषों को नमस्कार करते,  
भावी तीर्थंकारों को नमस्कार करते,

भगवत् रूप-अरूप को नमस्कार करते,  
शुद्धात्मा स्वरूप को नमस्कार करते,  
तत्त्वज्ञान स्वरूप को नमस्कार करते,  
प्रगट केवलज्ञान को नमस्कार करते,

मूर्त ‘व्यवहार’ को नमस्कार करते,  
‘रिलेटिव’ संबंधों को नमस्कार करते,

‘निश्चय’ लक्ष्य से व्यवहार करते,  
‘रियल स्वरूप’ को नमस्कार करते,  
‘व्यवस्थित’ कर्ता है, उभा नहीं करते,

ऋषानु-संबंधों को नमस्कार करते,  
दिव्ययक्षु उपयोगे 'निकाल' करते,  
सन्मुष्मी सभ 'झाँलों' का निकाल करते,

शुद्धात्म रमण को संस्कार करते,  
शुद्धात्मा के 'ओकाउन्टों' में भरती डी करते.

पंच महाभूतों को नमस्कार करते,  
छः तत्त्वों की व्यवस्था को नमस्कार करते,

मूर्तामूर्त भोक्ष की डी भजना करते,  
चार निकाय देवों से पूर्ण विनय करते,  
जगृत गणधर देवों को सदा याद करते,

सूर्य—चंद्र—तारादि को नमस्कार करते,  
नवग्रह देवता को नमस्कार करते,  
श्री सर्वेन्द्रों, भुविन्द्रों की रक्षाशा वर दें,

घंटाकर्ण महावीरज को नमस्कार करते,  
नाकोडा भैरवज को नमस्कार करते,  
माणिभद्र वीरज को नमस्कार करते,  
भोमियाज महाराज को नमस्कार करते,  
श्री धरणेन्द्र देव को नमस्कार करते,

अपने 'कुलदेवता' को नमस्कार करते,  
अपनी 'कुलदेवीज' को नमस्कार करते,

पद्मावती देवीज को नमस्कार करते,  
यकेश्वरी माताज को नमस्कार करते,

श्री अंबा माताज को नमस्कार करते,  
भद्रकाली, भुय्यर माँ को नमस्कार करते,  
आदि शिवशक्ति को नमस्कार करते,  
चैतन्यशक्ति की उपासना करते,

જગત્કલ્યાણ કી ભાવના કરતે,  
દુનિયા મેં શાંતિ કી પ્રાર્થના કરતે,

સર્વસ્વ પાવનકારી અર્ચના કરતે,  
'સબકા ભલા હો' નિત્ય સ્તુતિ કરતે,  
ચતુર્ગતિ જીવાત્મા કો વંદના કરતે,

સંતપુરુષોં કી સેવા કરતે,  
સત્પુરુષોં કી પૂજા કરતે,

સિદ્ધ-ગુણધામ કા ધ્યાન-કીર્તન કરતે,  
અપને હી શુદ્ધાત્મા કી ભક્તિ કરતે,

સાંસારિક પ્રવૃત્તિ ભી આત્માર્થે કરતે,  
શારીરિક વૃત્તિ-શક્તિ ઉપકારાય ખર્ચતે,

વત્સલમૂર્તિ કો સબ પ્યાર કરતે,  
બચ્ચે હૈં કમી-ભૂલ કો માઁ માફ કર દેં,

'દાદાજી' કી પાંચ હી આજ્ઞા મેં વરતે,  
ભીતર મેં કેવલજ્ઞાન ક્રિયા કરતે,

શાશ્વત શૂન્ય પૂર્ણ જ્ઞાન પ્રકટ વ્યક્તે,  
'દાદાજી' કો સર્વ ભાવ સમર્પણ કરતે,

“જ્ઞાની પુરુષ” હૈ, જો ચાહે સો કરતે,  
સનાતન સુખ હૈ, સિદ્ધાણં સ્વયમેં.

